अकडू मुर्गा

डॉ. मधु पंत

अकड़ू मुर्गा

© सर्वाधिकार प्रकाशकाधीन

अकड़ू मुर्गा

लेखक :
डॉ. मधु पंत

प्रकाशक :
स्पर्शमणि
104, पॉकेट–ए, माउन्ट कैलाश,
ईस्ट ऑफ़ कैलाश,
नई दिल्ली–110065

संस्करण :
सन् 2008

चित्रांकन :
सुश्री सुमन लता

सहयोग :
श्रीमती सरस्वती
सुश्री अनु सक्सैना

मूल्य:

मुद्रक : ग्राफिक प्रिंटर्स, 9313950827

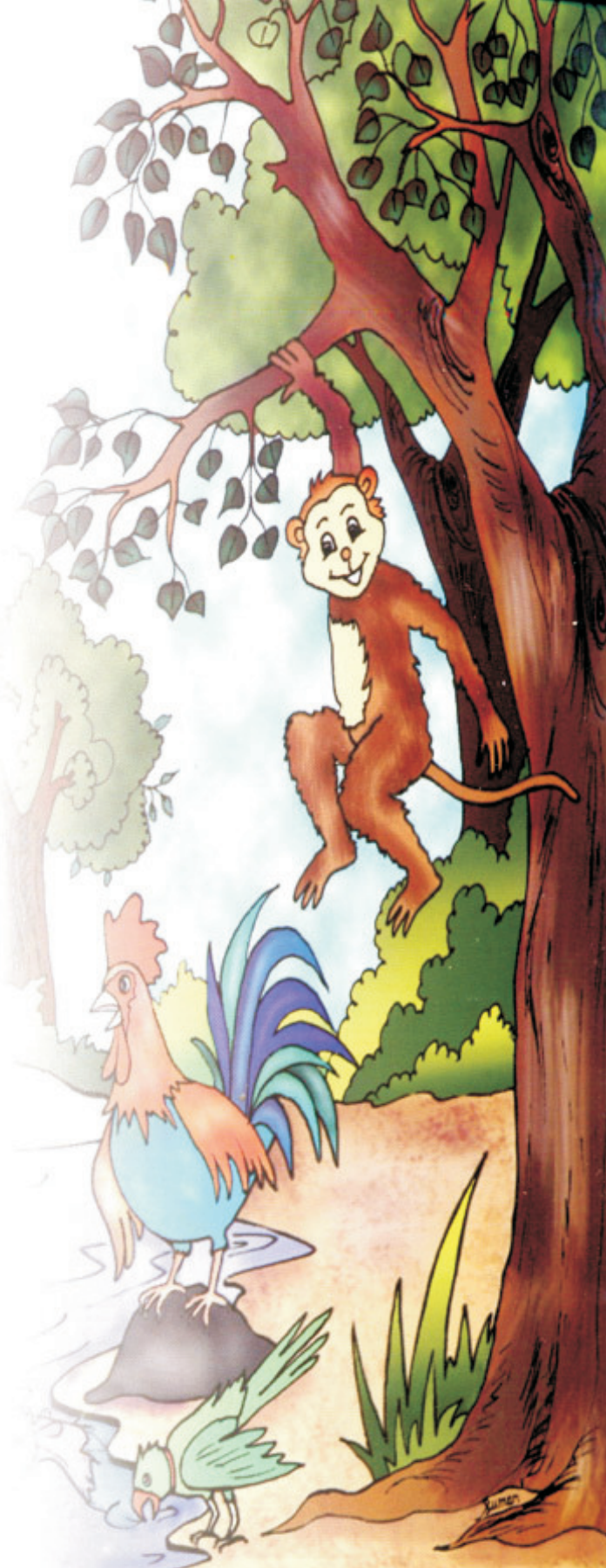

प्रेरणा स्त्रोत् – श्राव्या को...

अकड़ू मुर्गा

एक था जंगल और उसमें रहता था अकड़ू मुर्गा। अकड़ू–यानी अकड़ वाला.... अपने आप को सबसे अच्छा समझने वाला..... अपने मुँह मियाँ मिट्ठू बनने वाला। अकड़ू मुर्गा रोज़ सूरज के निकलने के पहले ही जागता और सबको जगाता

"उठो–उठो सोए हो क्यूँ?
कुकड़ू कूँ भई कुकड़ू कूँ।"

और फिर अकड़–अकड़ कर, मटक–मटक कर जताता जैसे उसने बड़ा भारी काम कर दिया हो।

मुर्गे की आवाज़ सुन कर, जंगल के सभी जानवर उठ जाते और अपने–अपने काम में लग जाते।..... क्या भालू क्या बंदर, क्या चिड़िया क्या तोता..... कोई नहीं फिर सोता।

मुर्गे की आवाज़, यानी बांग सुनते ही बन्दर महाराज, अंगड़ाई लेकर उठते और कसरत करना शुरू कर देते – एक डाल से दूसरी डाल में छलाँग लगाते और कलाबाजियाँ करते।

भोलू भालू भी 'कुकड़ू कूँ' की आवाज़ सुन कर उठ बैठता। वह देर रात तक रोज़ नाचता था, इस लिए उसकी नींद अपने आप नहीं खुलती थी।

उठते ही वह चारों टाँगें फैलाकर अंगड़ाई लेता और अपने नाश्ते यानी शहद की तलाश में चल देता...

अकड़ू मुर्गे की बांग सुन कर चिड़िया रानी भी झटपट अपने घोंसले से बाहर आती–अपनी चोंच धोती और फिर चीं–चीं चूँ–चूँ कर, अपने बच्चों को जगाती।

तोता भी मुर्गे की कुकड़ू कूँ सुन कर जागता। टें–टें–टें–टें शोर मचा कर बाकी जानवरों को जगाने लगता और फिर मिट्ठू राम–मिट्ठू राम गाने लगता।

एक दिन की बात है– मुर्गे ने सुबह–सुबह उठकर बांग लगाई और सबको जगा कर चला गया नदी में मुँह धोने। सुबह का समय था। आसमान में लाली छाई थी। पूरब दिशा से सूरज निकल रहा था। "कहीं सूरज मेरी बांग सुन कर ही तो नहीं जागता"? मुर्गे ने सोचा और वह बड़ा खुश हुआ। सुबह की सुनहरी रोशनी में जब मुर्गे ने पानी में अपनी परछाई देखी तो वह देखता ही रह गया और सोचने लगा "अरे! मैं कितना सुन्दर हूँ। मेरी लाल कलगी तो ऐसी लगती है जैसे मेरा मुकुट हो।"

"मैं काम भी कितना अच्छा करता हूँ। सुबह–सुबह सब को जगाता हूँ। यदि मैं न जगाऊँ तो शायद सूरज भी न उगे और..... फिर हमेशा रात ही रहेगी।" यह सोच कर मुर्गा फूला न समाया। उसने अकड़ कर अपनी गर्दन उठाई और मटकता–मटकता जंगल में टहल–टहल कर गाने लगा–

राजा जैसी चाल–ढाल है,
सिर पर कलगी लाल–लाल है।
मुकुट सरीखी लगती ज्यूँ,
कुकड़ू कूँ भई कुकड़ू कूँ

मुर्गा, गाना गाता और जंगल में एक सिरे से दूसरे सिरे चलता जाता।

सारे जानवर हैरानी से मुर्गे को अकड़–अकड़ कर चलते हुए देख रहे थे और सोच रहे थे कि आज इस मुर्गे को क्या हो गया है? आखिर तोते से रहा न गया और वह मुर्गे के पास आकर बोला.....

"अरे अरे मुर्गे भाई। क्या जंगल की कर रहे हो नपाई?"

मुर्गा बोला, "अदब से बात कर। देखता नहीं मैं कौन हूँ?..... मैं हूँ तुम सबका राजा।"

तोते ने हँस कर कहा, "अपनी शक्ल भी देखी है? ज़रा मुँह धोकर तो आ।"

मुर्गा बोला "हाँ हाँ मुँह धो कर, अपनी शक्ल देख कर ही आ रहा हूँ। ये कलगी मेरा मुकुट है, मेरा ताज।"

तोता हँस कर बोला–"अच्छा जो कल तक कलगी थी, वह आज बन गई ताज?" पर यह राज़ कैसे मालूम पड़ा आज?

"मुझे सूरज ने बताया। उसी ने कहा कि वह भी मेरे जगाने पर जागता है। यदि मैं न जगाऊँ तो सूरज ही नहीं निकलेगा और फिर उजाला भी नहीं होगा..... और तब रहेगा बस अंधेरा–अंधेरा।

इसी लिए मैं हूँ जंगल का राजा और इसी लिए मैं जन्म से मुकुट पहने हुए हूँ,'' मुर्गे ने और भी अकड़ कर कहा।

तोते ने पूरे जंगल में यह ख़बर फैला दी कि अकड़ू मुर्गा ही जंगल का राजा है। यह बात उसे सूरज ने खुद बतायी है। ख़बर सारे जंगल में आग की तरह फैल गई।

बस फिर क्या था? मुर्गे की तो हो गई पौ –बारह। एक बड़ा सा सिंहासन ला कर उसमें मुर्गे को बिठाया गया। अकड़ू मुर्गा और भी अकड़ कर बैठ गया राज सिंहासन में।

जंगल में, मुर्गे के स्वागत की ढेरों तैयारियाँ होने लगीं। बड़ा सा पण्डाल सजाया गया जिसमें मैना और कोयल ने स्वागत गीत गया। भालू ने बजाया ढोल और झूम–झूम कर नाचा मोर। तोते ने मुर्ग़े की तारीफ़ में कविता पढ़ी, तो चिड़िया ने खिलाई मिश्री, घी डली।

तरह–तरह का भोजन बना। देर रात तक नाच, गाना, खाना–खिलाना चलता रहा। मुर्गे को बत्तख के पंखों वाले नरम–नरम बिस्तर पर सुला दिया गया। थका मांदा मुर्गा नरम–नरम बिस्तर पर ज्योंही लेटा खर्राटे भरने लगा। उसे बड़ी गहरी नींद आ गई।

मुर्गा सोया तो ऐसा सोया कि बस सोता ही रहा। सुबह हो गई – पौ फटी, आसमान में हल्की लाली छाई। सूरज भी निकल आया.... पर मुर्गा तो खर्राटे ही भरता रहा–

चिड़िया भी जाग गई – भालू भी जागा– तोते की नींद भी खुल गई और बंदर भी आया भागा–भागा।..... और तब सब पशु–पक्षियों ने देखा..... सूरज तो अपने आप ही उगता है। सब जानवर भी सुबह होने पर खुद ही उठ जाते हैं.....

"तो इस मुर्गे ने हमसे झूठ बोला, हमें बुद्धू बनाया – खुद को राजा बता कर शान से ऐंठा रहा और अकड़ कर सिंहासन पर बैठा रहा" सबने सोचा।

बस फिर क्या था? जंगल के सारे जानवर जा पहुँचे मुर्गे के पास, जहाँ वह मीठी नींद में सो रहा था। सबने मिल कर की उसकी ठुकाई और उसकी सारी अकड़ निकाल कर, सचमुच में ही उसे मुर्गा बना दिया।

अकड़ू मुर्गे को घमण्ड करने और झूठ बोलने का फल मिल ही गया।

डॉ. मधु पंत

बच्चों की सृजन क्षमता, वैज्ञानिक चेतना एवं सर्वांगीण विकास हेतु समर्पित

पिछले चार दशकों से बच्चों के लेखन में प्रवृत्त। एन.सी.ई.आर.टी. के विभिन्न विभागों, आकाशवाणी, दूरदर्शन, यूनीसेफ, शिक्षा विभाग दिल्ली सरकार आदि के विभिन्न लेखन कार्यों (रेडियों, टेलीविज़न, फिल्म, पुस्तक) तथा फिल्म निर्माण से संम्बद्ध।

फिल्म "विज्ञान क्या है?" को अंतर्राष्ट्रीय (एन.एच.के.) पुरस्कार। यू.एन.डी.पी. कार्यक्रम के अंतर्गत–"Doon Valley Ecosystem" फिल्म एवं मल्टीमीडिया पैकेज का निर्माण। फिल्म "मियां गुमसुम और बत्तोरानी" को वीडियों फिल्म का प्रथम पुरस्कार। विज्ञान एवं प्रौद्योगिकी विभाग, भारत सरकार द्वारा बच्चों में विज्ञान एवं प्रौद्योगिकी को लोकप्रिय बनाने का वर्ष 2006 का **राष्ट्रीय पुरस्कार**। हिन्दी अकादमी, दिल्ली सरकार द्वारा पुस्तक "खेलो तो जानें" को वर्ष 2006 का किशोर एवं बाल–साहित्य पुरस्कार।

लगभग सत्रह वर्षों तक राष्ट्रीय बाल भवन का निदेशक के रूप में नेतृत्व तथा अनेक अभिनव कार्यक्रमों एवं प्रकाशनों का सूत्रपात। सन् 1990 से "सुलक्ष्य" न्यूज़लेटर का प्रारंभ तथा सन् 1994 से 'अक्कड़–बक्कड़' बच्चों की, बच्चों द्वारा, बच्चों के लिए पुस्तक का प्रकाशन। संचरण परियोजना के अंतर्गत पर्यावरण संबंधी गीतों, सी.डी. का निर्माण। राष्ट्रीय साहित्यिक गोष्ठी के अंतर्गत दस पुस्तकों–त्रिविधा, त्रिपदा, त्रिदिशा, त्रिधारा, त्रिवेणी, त्रिपथगा, त्रिसंगम, त्रिसंध्या, त्रिवर्णा, त्रिसाम्या का सम्पादन व प्रकाशन। पर्यावरण संबंधी प्रोटोटाइप खेल "भावी शहर का पासपोर्ट" का निर्माण। "बालश्री" जैसी विलक्षण परियोजना की संकल्पना एवं कार्यचयन।

प्रकाशित पुस्तकें : चाय की कहानी, रसोई घर, आंखों के तारे सोजा, Pied Piper of The Century, वृक्ष हमारे मित्र, पानी तेरी अजब कहानी, रंगों की तकरार, संचरण, बूझों तो जानें, भुलक्कड़ मक्खी, बड़ा अनोखा घर है पेड़, खेलो तो जानें, बालभवन–एक दृष्टि, Bal Bhavan—A vision, Magic Eye तथा इंटरनेट एक जादुई चिराग। अनेक विषयगत पोस्टरों का निर्माण।

सम्प्रति : 'स्पर्शमणि' संस्था का सूत्रपात जिसके माध्यम से बच्चों, किशोरों, युवाओं और शिक्षकों के लिए अनेक अभिनव प्रकाशनों, कार्यक्रमों, कार्यशालाओं के आयोजन की योजना ताकि अंतः प्रतिमा का प्रस्फुटन हो, वैज्ञानिक जागरूकता उत्पन्न हो तथा सृजनशीलता विकासित हो।

"स्पर्शमणि" के अंतर्गत निम्न कार्यों की योजना है–

- 'संचित' परियोजना के अंतर्गत दस पुस्तकों का निर्माण, जिनमें उपलब्ध संचित साहित्य को, संकल्पना, चिन्तन और तर्क के आधार पर, नया मोड़ दे कर कहानियों, कविताओं की रचना करना ताकि वैज्ञानिक चेतना उद्‌भासित हो।
- "जंगल में...." शीर्षक के अंतर्गत अत्यन्त रोचक, हास्य से भरपूर पद्रंह कविताओं की अद्‌भुत पुस्तक का निर्माण तथा ऑडियो कैसेट के निर्माण की योजना। "टुइयां" के आधार पर बाल–उपन्यास का प्रकाशन जिसका आधार एक सृजनशील एवं वैज्ञानिक सोच वाले बच्चे की मानसिकता है। अत्यन्त रोचक हास्य प्रधान यह उपन्यास मनोरंजन के साथ–साथ बच्चों को विज्ञान विषय के प्रति आकर्षित करेगा। "टुइयां" बाल फिल्म बनाने की योजना।
- सृजनशीलता – पहचान एवं संपोषण (Identifying and Sustaining Creativity), समय प्रबंधन (Time Management), गणित का ख़ौफ (Maths Phobia), वैज्ञानिक प्रवृत्ति (Scientific Temper), व्यक्तित्व विकास (Personality Development), आदि शीर्षकों की द्विभाषी पुस्तकों के निर्माण एवं कार्यशालाएं आयोजित करने की योजना।
- ग्रामीण अंचल एवं दूर दराज के क्षेत्रों में तथा संस्थाओं में विषयगत कार्यशालाएं करने तथा बाल साहित्य उपलब्ध कराने की योजना।